894
Н

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
1294/1071
आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 894

2011

891.431
Sh23 Vij

894

* बन्दे मातरम् *

विजय-दुन्दुभी

नहीं है तोप तमंचा तीर, नहीं है बरछी और कृपाण ।
नहीं है उनके पास मशीन, न उड़ने वाले वायु विमान ॥
।अहिंसा है जिनका उद्देश्य, उन्हीं बस असहयोग से काम
छिड़ा है सत्य पक्ष के बीच, गांधी गवर्मेन्ट संग्राम ॥

संग्रहकर्त्ता —

पं॰ राम सहाय शर्मा

सैनिक कांग्रेस कमेटी,

फीरोजाबाद जिला (आगरा)

मूल्य)॥।

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
10 DEC. 1930

१ झंडा-गान

झंडा ऊंचा रहे हमारा।
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा ॥ झंडा० ॥

सदाशक्ति बरसाने वाला, प्रेम सुधा सरसाने वाला।
वीरों को हर्षाने वाला, मातृ भूमि का तन मन सारा ॥झंडा०॥
स्वतंत्रता के भीषण रण में, लखकर जोश बढ़े क्षण क्षण में।
कांपे शत्रु देखकर मन में, मिट जावे भय संकट सारा ॥झंडा०॥
इस झंडे के नीचे निर्भय, लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय।
बोलो भारत माता की जय, स्वतंत्रता है ध्येय हमारा ॥झंडा०॥
आवो प्यारे वीरो आओ, देश धर्म पर बलि बलि जावो।
एक बार सब मिलकर गावो, प्यारा भारत देश हमारा ॥झंडा०॥
इसकी शान न-जाने पावे, चाहे जान भले ही जावे।
विश्व विजय करके दिखलावे, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा ॥झंडा०॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 894
Date 24.12.71
GOVT. OF INDIA

२ केसरिया-बाना

भारत के वीरो सरदारो, पहिनो अब केसरिया बाना।
इस तरह वतन पर मिट जावो, जिस तरह शमां पर परवाना॥
ऐसे घूमो झूमो रन में, जैसे हाथी कजली बन में।
आगे को ही बढ़ते जाना, मत पीठ शत्रु को दिखलाना ॥भारत०॥
जीवोगे वैभव पावोगे, मर गये स्वर्ग को जावोगे।
दोनों हाथों में लड्डू हैं, फिर मरने से क्यों घबराना ॥भारत०॥

बोलो निज मातृ भूमि की जय, आजावो हो निशंक निर्भय।
रहना दुनियां में सदा नहीं, एक रोज़ सभी को है जाना ॥भारत०॥

---

३ बारडोली को चलो

चलो वीरो बारडोली को, साज लो अपनी टोली को।
दोहा—सात वर्ष के बाद फिर, आया पर्व अमोल।
घर घर से निकलो चलो, भारत की जय बोल।
न डरना गोले गोली को ॥ साज० ॥
दोहा – वही लगन नेता वही, वही ब्रिटिश सरकार।
फिर क्यों बैठे साधि चुप, वीरो हिम्मत हार ॥
लगालो चन्दन रोली को ॥ साज० ॥
दोहा—आती हो उस ओर से, छर्रों की बौछार।
इधर मची हो प्रेम से, जय जय कार पुकार ॥
मिटादो ब्रिटिश ठठोली को ॥ साज० ॥
दोहा—घर घर में होवे ध्वनित, भव्य भाव भरपूर।
ब्रिटिश-गर्व सत्याग्रही, करदें चकना चूर ॥
जलादें जड़ता होली को ॥ साज० ॥

---

४ रण भेरी बजा दो

बजादो रण भेरी रण धीर ॥
चलादो चक्र निजी अनभूत,

दिखादो रण-कौशल अद्भूत,
जननि के बनकर सच्चे पूत,

बढ़े चलो सैनिका समर में अरि समूह को चीर ॥ बजा० ॥

तुमुल ध्वनि गूंजे नभ हर हर,
शत्रु भय मान कंपे थर थर,
त्याग रण-भूमि भगें भर भर,

विजय-श्रीकर प्राप्त मातु की काट देउ जंज़ीर ॥ बजा० ॥

---

५ देश पै क्यों मतवाले हैं

कांटे हैं जुबाँ पर अपनी पड़े पावों में छलकते छाले हैं।
कह सकते नहीं चल सकते नहीं जीने के हमको लाले हैं ॥
कुछ ज़िद है उन्हें, कुछ हठ है उन्हें यह बात तो अच्छी बात नहीं।
जाँचे परखे सोचे समझे हर तरह से देखे भाले हैं ॥ कांटे० ॥
आंखें रखते हो तो देखो दिन रात में कितना अन्तर है।
भगवान की उनपर कृपा है वह गोरे हैं हम काले हैं ॥ कांटे० ॥
कहने सुनने में रखते हैं हर सूरत को हर सूरत से।
सांचा उनका क्या साँचा है सांचे में सब को ढाले हैं ॥ कांटे० ॥
मस्तों की न पूछो अब 'बिसमिल' बद मस्त हैं अपनी मस्ती में।
संसार में हलचल इसकी है हम देश पै क्यों मतवाले हैं ॥ कां० ॥

जर माल धन जेवर, सभी छोड़ना पड़ा ।
अपने पियारे घरों से, मोह तोड़ना पड़ा ॥
इस पर भी रहम खाया नहीं, जालिम शैतान ने ।
लाखों को कत्ल कर दिया, एक आन २ में ॥
बच्चे यतीम कर दिये, और देवियां जी रांड ।
अपने घरों में ले गये कई, युवतियां शैतान ॥
सब ओर हा २ कार थी, आकाश लाल था ।
हिन्दू जिधर ही भागते, उधर ही काल था ॥
भालों की नोकें चमकती थीं, अन्धेरी रात में ।
हिन्दुओं के मारने को सब, बैठे थे घात में ॥
बच्चे बेचारे रोते थे, गोलियों की सुन आवाज ।
चारों तरफ उड़ाती थी, अपने वह शोले आग ॥
लाखों मकान जल कर जी, राख हो गये ।
जायें कहाँ को जायें, सब निराश हो गये ॥
अगनी की लपटें पहुचती थीं, आसमान पर ।
मुशकिल बनी थी हर तरह, हिन्दुओं की जान पर ॥
घर में रहें तो आग घनी, धूआदार थी ।
बाहर कदम निकाला तो, गोली तयार थी ॥
अन्दर खुदा था कूआं, और बाहिर थी खाई ।

सब ओर से थी शामत, उन बेचारों की आई ॥
आवाज गोलियों की, सीने को हिलाती थी।
बच्चों की भूख देख, छाती फटती जाती थी॥
दूध माँ दूध, बिलक २ कर पुकारते।
थे बाल सर के नोचते, और चीखें मारते॥
भूखे प्यासे काटते थे, अपने दिन गरीब।
कोई क्या बना सके, जब उलटा हो नसीब॥
राशन दुकानें बन्द थीं, हिन्दुओं के वास्ते।
भागें किधर को भागें, थे सब बन्द रास्ते॥
सड़कों के चौराहों पर, थे लीगी खड़े तैयार।
गलियों में हर तरफ थे, छुरे बाज बेशुमार॥
बचनेकी कोई राह न थी, किधर को भागते।
आराम चैन लुट गया, दिन रात जागते॥
रक्षक कोई नहीं था सिवाय भगवान् के।
सब रट रहे थे नाम उसका दिलो जान से॥
विनती हमारी सुन लेना तू कृष्ण मुरारी।
मँझधार में पड़ी है "नाथ" नाव हमारी॥
द्रोपदी ने तुमको टेरा था, था चीर बढ़ाया।
सुदामा गरीब का था, दुःख दर्द मिटाया॥

गजराज ने पुकार करी, फन्द छुड़ाया ।
और थम्भ फोड़ भक्त प्रह्लाद बचाया ॥
नरसी की हुण्डी तारने, बन आये सांवल शाह ।
हम पर भी दीनानाथ, जल्दी करो कृपा ॥
केवट हो तुम्हीं नाव के, पतवार नहीं है ।
गहरा अथाह समुद्र है कोई पार नहीं है ॥
सब आस इच्छा छोड़, तेरे द्वारे आये हैं ।
"नाथ" पापी ज़ालिमों के, हम सताये हैं ॥
दीनानाथ ने दीनों की शीघ्रही सुनी पुकार ।
जवाहिर लाल ने दे दिया जिन्ना को एक तार ॥
यह ठीक कदम नहीं है जो है तुमने उठाया ।
सब सुन लिया है मैं ने, जो है चक्र चलाया ॥
हम ईंट का जवाब, पत्थर से देवेंगे ।
गर बाज तुम न आये तो, हम भी बदला लेवेंगे ॥
पढ़ तार जवाहिर वीर का, जिन्ना भी घबराया ।
उसी समय लियाकत अली को, पास बुलवाया ॥
और हिन्द सरकार के जी, वीर का पैग़ाम ।
लियाकत अली को पढ़कर, सुनाया गया तमाम ॥

और हुकम दिया शहर २, कैम्प खुलवाओ।
और हिन्दू बच्चे औरतें मरद, उसमें भिजवाओ॥
नहीं तो भाई सुनलो, एक ही आन २ में।
मुसलिम न बचने पायगा, एक भी हिन्दुस्तान में॥
गर उनकी खैर चाहते हो, तो इनको निकालो।
और तीन २ कपड़ों में ही, सबको जा टालो॥
लियाकत अली ने समझा, सोचा और विचारा।
और फौज़ पुलिस को, जाके सबको फिटकारा॥
शरणार्थियों के जा बजा, सेंटर बना दिये।
और हिन्दुस्तानी फौजों ने, पहरे लगा दिये॥
घर बार माल छोड़ सब, कैम्पों में आये।
भूखों के मारे चाँद से, मुखड़े थे कुम्हलाये॥
रौनक न रही चेहरों पर, उन गरीबों के।
थे रंग भगवान् के, चक्कर नसीबों के॥
महलों के अन्दर सेजों पर, जो सोने वाले थे।
धरती पै घास फूस के जी, वहां बिस्तर डाले थे॥
छत्तीस प्रकार के जो खाने वाले, थे पकवान।
मुठ्ठी भर चने को तरसते थे, वह बदनसीब इनसान॥

बच्चे जो दूध में ही, सदा नहाते थे।
वह एक बून्द पानी के लिये, कुरलाते थे॥
वह दर्द भरा करुणा दृश्य, देखा न जाता था।
रोमांच शरीर होता, कलेजा मुँह को आता था॥
इस पर भी बाज आये न वह, जुल्म से मलेच्छ।
वहाँ भी तरह २ के, पहुँचाने लगे क्लेश॥
खाने को कुछ न देते थे, भूखों थे मरते।
न मिलता दूध बच्चों को, रो २ पुकारते॥
पानी के जितने कूवें थे, सब जहर भर दिया।
खाना पीना उन गरीबों का, सब बन्द कर दिया॥
बड़ी मुशकिल में जान थी, रो २ पुकारते।
दरख्तों के पत्ते खा २ कर, वह दिन गुज़ारते॥
दिनभर जलते थे धूपमें, न था सायाका कहीं निशान।
कुछ बस नहीं चलता था, बेबस थे सभी हैरान॥
त्राहि २ बचाओ भगवान्, ये सब पुकारते।
दिन रात रो २ कर गरीब, समय गुजारते॥
रक्षा करो भगवान्, नैया पार लगाओ।
इस दुःख से मौत भेजो, या आन बचाओ॥
दीनों के तुम्हीं "नाथ" हो, सब वेद उचारें।

तेरे बिना भगवान् कौन, कष्ट निवारें ॥

सच्चे मन से दुःखियों ने जब करी फरियाद ।
जवाहिर लाल के कानों तक पहुँच गई आवाज़ ॥

और हिन्द सरकार पै भी खबर, यह आई ।
भूखों से मर रहे हैं, कैम्पों में सब भाई ॥
फौरन ही रात २ में, इन्तज़ाम करवाया ।
खाने का भर जहाज पै, जहाज भिजवाया ॥
यूँ भूख की समस्या तो, सब हल हो गई ।
निकले जल्द यहां से, यही फिक्र थी लगी ॥
दिन रात फिक्र सोच, में ही थे गुज़ारते ।
भगवन् हमें बचाओ, रो २ कर पुकारते ॥
भगवान् चारों ओर से, तूफान ने घेरा ।
और बीच भंवर नैया, केवल आसरा तेरा ॥
सब सोच में पड़े थे, हिन्दू नर नारी ।
कैसे उतरेगी प्रभू, पार नाव हमारी ॥
वह शुभ समय किस दिन, जी "नाथ" आयगा ।
भारत किनारे बेड़ा हमारा, पहुंच जायगा ॥
दर्शन करेंगे जाके, गान्धी और जवाहर के ।

गायेगें जय हिन्द नाहरें, गला फाड़ २ के ॥
कब देगें हम सलामी, प्यारे तिरंगे की ।
जो लालकिले पै झूल रहा, उसी झंडे की ॥
भरा था दिल में भाव, यही चाहते थे नर नारी ।
भारत की दुल्हन कब देखेंगे, दिल्ली वह प्यारी ॥
इन ख्यालों को कर याद, मन अपना बहलाते थे ।
और दुःख अपने पिछले, सभी भूल जाते थे ॥
फिर क्या गुजरी सुनिये, आगे का जी हाल ।
यवनों ने रच दिया, अपना दूसरा जाल ॥
गाड़ी तुम्हारी आ गई, सब बान्ध लो सामान ।
जल्दी से तुम्हें पहुंचा देंगे, हम हिन्दुस्तान ॥
ऐसे कपट भरे वचन सुन, सब हो गये तयार ।
सामान ट्रकों में लाद दिया सब ने बारम्बार ॥
खुश हो २ मरद औरत बच्चे, चले गाड़ी की ओर ।
खाली स्टेशन देख कर, सब के उड़ गये तौर ॥
देखा न रेल गाड़ी को, न अपने सामान को ।
वह ज़ार २ रोते थे, ज़ालिमों की जान को ॥
सब लुट गया इस ढंग से, जो उन पै माल था ।

लेखनी न लिख सके, जो उनका हाल था ॥
बस तीन २ वस्त्र केवल, सब के पास थे।
आशा रही न गाड़ी की, सो सब निराश थे ॥
पांच सात दिन के बाद, वहां जब गाड़ी आ गई।
तो ज़ालिमों के मन में, फिर शरारत छा गई ॥
जब सभी लोग भाग कर, गाड़ी तरफ़ चले।
तो लीगी उस समय पर, बोले वचन कड़े ॥
बिना रुपया सौ दिये न, कोई सवार हो।
बिना पैसे के जो बैठे हैं, उन सब को उतार दो ॥
गाड़ी न छोड़ते कोई, पचास हज़ार लिये बगैर।
रास्ते में ड्राइवर गार्ड भी, करते थे बड़ा कहर ॥
तीन चार २ घंटे तक न, गाड़ी चलाते थे।
लोग पियास और गर्मी से, घबराय जाते थे ॥
पानी २ करते कई बच्चे, मर गये।
मातायें बिलख के रोती थीं, निपूती कर गये ॥
गाड़ी में हाहाकार शब्द, की पुकार थी।
खून और रक्त की, बहती फुआर थी ॥
लेकिन न रहम आता उन्हें, नन्हीं जानों पर।

आह पुरतासीर यह जंज़ीर की झन्कार है ॥ हथ०
जेल का किसको है खटका किसको है सूली का डर।
देश पर कुर्बान होने को हरेक तैयार है ॥ हथ०
बच्चा बच्चा हिन्दु का है होगया सीना सपर।
रंग लायेगा बदन का खून फिर इकबार है ॥ हथ०
जिनको डर हो जेल का फांसी का हो ख़तरा जिन्हें।
चूड़ियां वह पहिन लें उनका यही सिंगार है ॥ हथ०
तेग़ हो तर्के तअल्लुक की स्वदेशी की हो ढाल।
फिर बहादुर देश अपना, अपना कारोबार है ॥ हथ०

---

१८ ग़ज़ल

हैं दिखाते डर हमें जो, आफ़िसर तलवार का।
कर रहे तैयार वह खुद, मक़बरा सरकार का॥
नीची गर्दन है हमारी, वार करके देख लो।
खतम हो जावे तुम्हारा, हौसला हर वार का॥
वतन पर कुर्बान होने को हैं जो आगे बढ़े।
है नहीं कुछ ख़ौफ उनको, जेल का या दार का॥
आख़िर सबको एक दिन, आयेगा वह रोज़े जज़ा।
देख लेना तब मज़ा, इस हरकते खूं ख़ार का॥
गन मशीं की देते धमकी ऐसे इतराते हो क्यों।
है इधर ताक़त इधर तो है खुदा लाचार का॥

१९. चर्खे से स्वराज्य

करेंगे मुल्क में क़ायम स्वराज्य चर्खें से।
मिलेगा हिन्द को फिर तख़्तो ताज चर्ख़े से॥
बनेंगे विगड़े हुये काम-काज चर्ख़े से!
रहेगी देश की आलम में लाज चर्ख़े से॥
हमें मशीनगनों की वह देता है धमकी।
उदू से पूछते हैं हम मिज़ाज़ चर्ख़े से॥
जिन्होंने लूट कर वीरान कर दिया भारत।
वसूल उनसे करेंगे खिराज चर्खे से॥
हमें यह चक्र सुदर्शन से कम नहीं चर्ख़ा।
मचाई धूम है दुनियां में आज चर्खे से॥

---

२० उस जेल में हम भी जायेंगे

जो जीवन ज्योति प्रकाश करे उस जेल में हम भी जायेंगे।
जिस जेल में संकट व्याधि कटे उस जेल में हम भी जायेंगे॥
जिस जेलमें तिलक समान गये जिस जेलमें हैं घनश्याम भये।
जिस जेल में मोतीलाल रहे उस जेल में हम भी जायेंगे॥
जिस जेल में लाला वास किया जिस जेलमें यतीन्द्र देह दिया।
जिस जेल जवाहरलाल है अब उस जेल में हम भी जायेंगे॥
जिस जेल सर्दार पटेल गये तैयवजी भी जिस जेल गये।
देवी सरोजिनी क़ैद जहां उस जेल में हम भी जायेंगे॥

भारत की विभूति वन्द जहां उसका प्रकाश नहीं मन्द वहां।
गांधी रहते स्वछन्द वहाँ उस जेल में हम भी जायेंगे॥
जेलों में जो रह कर आये वे विश्व में निर्मल कहलाये।
अभिलाष यही वर्म्मन के हृदय उस जेल में हम भी जायेंगे॥

---

२१ मुबारिक़ बाद

हमारे लीडरों का ज़ेल का जाना मुबारिक हो।
वतन के वास्ते तकलीफ़ का पाना मुबारिक़ हो॥
पड़ी हों हाथ पैरों में मुबारिक हथकड़ी बेड़ी।
शौक़ से ज़ेब तन पर ज़ेल का जाना मुबारिक हो॥
समझ कर हार फूलों का गले में तौक़ को पहिने।
राग जंज़ीर की झन्कार पर गाना मुबारिक हो॥
चटाई ज़ेल की क़ालीन हो कम्बल दुशाला हो।
कोठरी ज़ेल की वह महल शाहाना मुबादिक हो॥
सुबह को ज़ेल का दलिया मिसाल हलवे के मालूम हो।
उस मोहन भोग रोटी दाल का खाना मुबारिक़ हो॥
लिया जिस जेल में अवतार श्री बांकेबिहारी ने।
कृष्ण के जन्म गृह में हमको भी जाना मुबारिक हो॥
'दास' ऐसे पवित्र स्थान में जाने से क्या डरना।
देश हित के लिये दुख जेल के पाना मुबारिक हो॥

मुद्रक—बा० पद्मसिंह जैन,
जैन प्रेस, जौंहरीबाज़ार—आगरा।